अर्थशास्त्र - एक अन्तर्दृष्टि

-सत्यव्रत शास्त्री

एक समय था जब अनेक पाश्चात्य विद्वानों की यह धारणा थी कि भारतीय मनीषियों की शासन तंत्र में विशेष रुचि नहीं थी। उनक मत का अनुसरण करने वाले कतिपय भारतीयों का भी यही मत था। उनकी यह दृष्टि थी कि भारतीय चिंतक और विचारक धार्मिक और आध्यात्मिक विषयों में ही रमे रहते थे और लौकिक विषयों में बहुत कम रुचि थी। उनमें से कतिपय विद्वानों ने तो यहां तक कह दिया था कि शासन तंत्र विषय जो भी चिंतन भारत में हुआ वह धर्म के प्रसंग में ही हुआ और यह एक स्वतंत्र विज्ञान के रूप में कभी उभरा नहीं। इस मत का प्रभावी खंडन उस समय हुआ जब आर शामशास्त्री के निरंतर प्रयास से १६०५ में अर्थशास्त्र की पाण्डुलिपि उनके हाथ लगी जिसे उन्होंने १६०६ में अंग्रेजी अनुवाद के साथ प्रकाशित किया। उसके प्रकाशन ने उस समय के विद्वत् समाज को हिला कर रख दिया। यह ग्रंथ एक विश्वकोष जैसा था जिसमें जीवन के प्रत्येक विषय का स्पर्श था। यह केवल शासनतंत्र का ही विवेचन नहीं था अपितु वित्तीय प्रबंधन, अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, कला और शिल्प, नगर विन्यास वाणिज्य और इतिहास आदि प्र सभी पर इसमें सामग्री थी।

इस महत्त्वपूर्ण कृति के रचयिता के विषय में कोई प्रामाणिक सूचना उपलब्ध नहीं है। परम्परानुसार इसके लेखक के तीन नाम उपलब्ध होते हैं- एक कौटिल्य, दूसरा विष्णुगुप्त और तीसरा चाणक्य। इनमें से प्रथम दो के विषय में तो ग्रन्थ में स्वयं में उल्लेख है। ग्रंथ का प्रारम्भ ही कौटिल्येन कृतम् शास्त्रम् सार्थ इस वाक्य से होता है जिसकी पुष्टि ग्रंथ में अनेक बार पाये जाने वाले 'इति कौटिल्यः नेति कौटिल्यः' आदि वाक्यों से हो जाती है। कौटिल्य अथवा कौटल्य इन दोनों में से कौन सा रूप सही है इस पर भी भारतीय विद्वानों ने गहन चिंतन किया। टी. गणपति शास्त्री के अनुसार सही रूप कौटल्य ही होना चाहिए। कौटिल्य के विषय में उनका यह कहना है कि यह सही नहीं है। निघंटु ग्रंथों में कहीं भी कुटिल नाम के किसी गोत्रर्षि का उल्लेख नहीं है जिसके गोत्र में कौटिल्य ने जन्म लिया होगा। जबकि केशव स्वामी ने अपने नानार्थार्णव-संक्षेप में कुटल शब्द का एक गोत्रर्षि के रूप में और आभूषण के अर्थ में उल्लेख किया है-

अथ स्यात्कुटलो गोत्रकृत्यर्षौ पुंसिनप् पुनः।
विद्यादामरणे ऽथत्रि कुटिलं कुञ्चिते भवेत्।।

जो भी स्थिति रही हो कौटिल्य यह रूप ही उस महान् राजनीतिज्ञ के नाम के साथ सम्पृक्त हो गया। इकारमध्यता-कौटिल्य का उल्लेख करते समय टी. गणपति शास्त्री ने इसी शब्द का प्रयोग किया है उच्चारणवश केवल इसी शब्द में ही कालान्तर में नहीं आई। अनेक अन्य शब्दों में भी यही हुआ। रुक्मिणी और सौदामिनी इसके अन्य उदाहण हैं। दोनों में ही शुद्ध रूप रुक्मणी और सौदामनी है। इकार-मध्यता ने इन शब्दों को इस प्रकार प्रभावित किया कि अब ये इसी रूप में प्रयुक्त हो रहे हैं।

अर्थशास्त्र के रचयिता का नाम विष्णुगुप्त है इसकी पुष्टि इसके अंतिम पद्य से होती है जिसमें कहा गया है कि अनेक ग्रंथों में व्याख्या भेद को देखकर विष्णुगुप्त ने स्वयं इस ग्रंथ की और इस पर टीका की रचना की थी—

CC-O. Prof. Satya Vrat Shastri Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दृष्ट्वा विप्रतिपत्तिं बहुधा शास्त्रेषु भाष्यकाराणाम्।
स्वयमेव विष्णुगुप्तश्चकार सूत्रं च भाष्यं च।।

कहा जाता है कि विष्णुगुप्त जिसका अर्थ है विष्णु के द्वारा रक्षित यह नाम उसके पिता ने उसके नामकरण के अवसर पर रखा था। चाणक्य इस नाम के विषय में कोई प्रमाण नहीं मिला है। पर इस तरह की प्रबल परम्परा है कि इस ग्रंथ के रचयिता का नाम चाणक्य था। चाणक्य शब्द से यह लगता है कि कोई चणक नाम का व्यक्ति रहा होगा जिसका कि वह पुत्र था। यह उस तरह की स्थिति है जिस तरह पाणिनि शब्द की। इसी के आधार पर विद्वानों ने यह कहा कि उसके पिता का नाम पणिन - पणिनस्य अपत्यं पुमान् पाणिनिः - था। पर उसके विषय में अन्य कोई किसी प्रकार का प्रमाण उपलब्ध नहीं होता है। पाणिनि के उत्तरवर्ती किसी भी ग्रंथ में इसका उल्लेख नहीं मिलता पर चाणक्य के विषय में यह स्थिति नहीं है। हेमचन्द्र के अभिधान - चिंतामणि में स्पष्ट रूप से उसे चणकात्मज कहा गया है। इसी पद्य में उसके अन्य अनेकों नामों का भी हेमचन्द्र ने उल्लेख किया। पद्य इस प्रकार है-

वात्स्यायनो मल्लनागः कौटिल्यश्चणकात्मजः।
द्रामिलः पक्षिलस्वामी विष्णुगुप्तो ऽङ्गुलश्च सः।।

टी. गणपति शास्त्री और एम बी. कृष्णाराव के अनुसार चाणक्य नाम पिता से सम्बद्ध न होकर स्थान से सम्बद्ध है। चाणक्य चणक नाम के स्थान का रहने वाला था। उसी कारण उसका यह नाम पड़ा। आनन्दप्रकाश अवस्थी के अनुसार चाणक्य शब्द ब्युत्पत्ति के आधार पर गोत्र से सम्बद्ध है। अर्थात् वह चणक का गोत्रापत्य था। अर्थात् चणक का पौत्र या उसके आगे का वंशज {अपत्यं पौत्रप्रभृतिगोत्रम् (४.१.१६२) गोत्रापत्य अर्थ में गर्गादिभ्यो यञ् (४.१.१०५) से यञ् प्रत्यय (कौटिल्य) लगकर चाणक्य शब्द बनता है} था। ग्रंथ के किसी अन्य विषय की चर्चा करने से पूर्व ग्रंथकार के उस वचन को ध्यान में रखना होगा जहां कौटिल्य नाम से ग्रंथकार का उल्लेख है। उस वक्तव्य में यह कहा गया है कि सभी शास्त्रों का पारायण कर और उनका व्यावहारिक प्रयोग का अध्ययन कर राजाओं के उपयोग के लिए शासनविधि समझाने के लिए कौटिल्य ने इस शास्त्र की रचना की-

सर्वशास्त्राण्यनुक्रम्य प्रयोगमुपलभ्य च।
कौटिल्येन नरेन्द्रार्थे शासनस्म विधिः कृतः।।

कौटिल्य के विषय में अनेक दंतकथायें प्रचलित हैं। एक में यह कहा गया है कि मगध के महापद्मनंद नाम के शासक का शकटार नाम का एक मंत्री था जिसका कि शासक ने अपमान किया था। उस अपमान का बदला लेने के लिए उसने कौटिल्य का उपयोग किया। कौटिल्य उसे एक जंगल में दीख गया था, जहां वह जिस शाखा पर बैठा था उसे ही काट रहा था। उसे वह अपने साथ ले आया और श्राद्ध संस्कार के समय राजदरबार में अन्य ब्राह्मणों की पंक्ति में उसे भी बैठा दिया। इस पर सुबंधु नाम के एक ब्राह्मण ने आपत्ति की। उसकी आपत्ति को सही मान महापद्मनंद ने कौटिल्य को अपमानित कर ब्राह्मणों की पंक्ति से निकाल बाहर किया। तब उसने प्रतिज्ञा की कि वह इस अपमान का बदला लेगा। उस प्रतिज्ञा का ही यह परिणाम था कि नंदों

CC-O. Prof. Satya Vrat Shastri Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

का शासन समाप्त हो गया और चन्द्रगुप्त मौर्य उनके स्थान पर सिहांसनारूढ हुआ। एक दूसरी दंतकथा का ग्रीस के राजदूत मेगास्थनीज़ से है। इसके अनुसार जब मेगास्थनीज़ कौटिल्य से मिलने आया तो वह शासन के कागज़-पत्र देख रहा था। जब उसके अनुचर ने आकर बतलाया कि मेगास्थनीज़ उससे मिलने आया है तो जो दिया उसके कक्ष में जल रहा था उसने उसे बुझा दिया और एक दूसरा दिया जला दिया। मेगास्थनीज़ के ध्यान में यह बात आई और उसने कौटिल्य से पूछा कि उसने यह क्यों किया। उसके उत्तर में कौटिल्य ने कहा कि आपके आने से पूर्व मैं राजकीय कागज़-पत्र देख रहा था इसलिए शासन की ओर से जो दिया मुझे दिया गया था वह जल रहा था। अब आप मुझसे मिलने आए हैं और यह हमारा व्यक्तिगत मिलन है इसलिए जो आपके आने के बाद मैंने दिया जलाया वह मैंने अपनी आमदनी से जलाया।

जहां तक कौटिल्य के काल का प्रश्न है उसमें किसी प्रकार के संदेह का अवकाश नहीं है, इस कारण कि वह चंद्रगुप्त मौर्य का प्रधानमंत्री था जिसका काल चतुर्थ शताब्दी ईसा पूर्व के आसपास है। यहां यह कहना अप्रासंगिक नहीं होगा कि अर्थशास्त्र अपने प्रकार का कोई पहला ग्रंथ नहीं है इससे पूर्व अनेक ऐसे ग्रंथों की रचना हो चुकी थी। स्वयं कौटिल्य ने इसे स्वीकार किया है। उसने कहा है कि पूर्वाचार्यों द्वारा रचित प्रायः सभी अर्थशास्त्रों का सार ग्रहण कर उसने पृथ्वी के लाभ और पालन के लिए इस अर्थशास्त्र की रचना की थी-

पृथिव्या लाभे पालने च यावन्त्यर्थशास्त्राणि पूर्वाचार्यैः प्रस्थापितानि प्रायशस्तानि संहृत्यैकमिदमर्थशास्त्रं कृतम्। अपने से पूर्ववर्ती आचार्यों का उन्होंने नामतः उल्लेख किया है- भारद्वाज, विशालाक्ष, पराशर, पिशुन, कौण्डपदन्त, वातव्याधि, बाहुदन्तीपुत्र, कात्यायन, घोटमुख, दीर्घचारायण, पिशुनपुत्र, किञ्जल्क आदि आदि। कौटिल्य ने अर्थशास्त्र यह सञ्ज्ञा जो अपने शास्त्र के लिए अपनाई उसकी व्याख्या भी की। उन्होंने कहा कि अर्थ का अर्थ है भूमि, लोगों की निवासस्थली और शास्त्र का अर्थ है उनके लाभ और पालन के उपाय- मनुष्याणां (पृथिव्यां) वृत्तिरर्थः, तस्याः पृथिव्या लाभपालनोपायः शास्त्रम् अर्थशास्त्रम् इति।" मनुष्यों की जीविका का साधन धन है। जो उसकी प्राप्ति और रक्षण के उपाय अर्थात् साधनों को बतलाता है वह अर्थशास्त्र है।

संस्कृत वाङ्मय में शासन तन्त्र के लिए अन्य दो शब्दों का भी प्रयोग हुआ है। उन में एक है राजदर्शन या राजशास्त्र और दूसरा है दण्डनीति। चार विद्याओं में एक दण्डनीति भी है— अन्वीक्षिकी त्रयी वार्ता दण्डनीतिश्च शाश्वती। दर्शनशास्त्र, तीन वेद, कृषि विज्ञान और न्याय-व्यवस्था। न्याय-व्यवस्था को शाश्वत कहा गया है, अनन्त काल से वह चली आ रही है।

भारत में मानुष्य जीवन के चार उद्देश्य बताये गए हैं जिन सभी को एक सञ्ज्ञा पुरुषार्थ चतुष्टय से अभिहित किया जाता है। ये हैं धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। इनमें अन्तिम का सम्बन्ध जीवन के बाद की स्थिति का है जबकि पूर्व तीन का इस जीवन से। जिन ग्रंथों में इन चार का विवेचन-प्रतिपादन है उन्हें क्रमशः धर्मशास्त्र, अर्थशास्त्र, कामशास्त्र और मोक्षशास्त्र कहा जाता है। चूंकि मोक्षशास्त्र का इहलोक से सम्बन्ध नहीं है, इसलिए उसे अलग कर शेष तीन को सामूहिक रूप में त्रिवर्ग इस सञ्ज्ञा से अभिहित किया जाता है।

जब से शामशास्त्री ने १६०४ में अर्थशास्त्र को खोज निकाला और मात्र एक पाण्डुलिपि के आधार पर अंग्रेज़ी में अनुवाद के साथ १६०६ में मैसूर गवर्नमैण्ट संस्कृत ग्रन्थमाला के अन्तर्गत इसे प्रकाशित किया तब से बहुत लोगों का ध्यान इसकी ओर गया। शामशास्त्री के संस्करण के बाद इसका जो एक अन्य महत्त्वपूर्ण संस्करण प्रकाशित हुआ वह टी. गणपति शास्त्री

CC-O. Prof. Satya Vrat Shastri Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

का था जोकि तीन खण्डों में १६२१, १६२४ और १६२५ में त्रिवेन्द्रम् संस्कृत ग्रन्थमाला के अन्तर्गत श्रीमूल नाम की संस्कृत टीका के साथ प्रकाशित हुआ था। टी. गणपति शास्त्री को शामशास्त्री का अनुवाद पसन्द नहीं था। अनेक स्थानों पर उन्हें यह अशुद्ध और भ्रामक लगा। इस बीच उनका प्रयास जारी रहा कि इसकी कुछ अन्य पाण्डुलिपियां भी उनके हाथ लग जाएं जिससे इसका पाठशोधन हो सके। उनका प्रयास रंग लाया। उन्हें तिरुप्पर्पु के स्वामियार मठ से मलयालय लिपि में लिखी दो पाण्डुलिपियां मिल गईं जो प्रायः शुद्ध थीं और जिनमें पाठ कहीं त्रुटित नहीं था। उनका भाग्य और उनका पुरुषार्थ उनका साथ दे रहा था। कुछ समय पश्चात् गवर्नमैण्ट ओरियण्टल मैनुस्क्रिप्ट लाइब्रेरी, मद्रास से दो और पाण्डुलिपियां मिल गईं जिनमें एक त्रावनकोर राज्य के एडप्पल्ली राजा के यहां मलयालम लिपि में पाई जाने वाली पाण्डुलिपि की हूबहू प्रतिलिपि थी। पांचवीं पाण्डुलिपि इस अर्थशास्त्र की उन्हें कोचीन के पाण्डुलिपि संग्रहालय में मिली। इन मूल ग्रन्थ की पाण्डुलिपियों के अतिरिक्त उन्हें गवर्नमैण्ट ओरियण्टल लाइब्रेरी, मद्रास से इसकी दो संस्कृत टीकाओं की पाण्डुलिपियां भी मिलीं। उनमें एक थी भट्टस्वामी की प्रतिपदचन्द्रिका जोकि द्वितीय अधिकरण के आठवें अध्याय से उस अधिकरण के अन्त तक भर थी। दूसरी थी माधवयज्वा की नयचन्द्रिका जोकि सातवें अधिकरण के ७ वें अध्याय से १२ वें अधिकरण तक के भाग पर थी। इन सभी मूल ग्रंथ और टीकाओं की पाण्डुलिपियों की सहायता से टी. गणपति शास्त्री ने अपना संस्करण तैयार किया जोकि अर्थशास्त्र, जिसमें अनेक जटिल पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग है, के मर्म को समझने का एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्रोत है। टी. गणपति शास्त्री के संस्करण ने अर्थशास्त्र के अध्ययन के द्वार खोल दिए। अनेक विद्वानों ने इस पर शोध किया। इसका विवेचन और विश्लेषण किया। इनमें विशेष उल्लेखनीय है आर. पी. कांगले जिनका तीन खण्डों का ग्रंथ विद्वत्समाज में सुतरां समादृत हुआ है। अर्थशास्त्र पर अन्य उल्लेखनीय शोध-कृतियां हैं- जे जौली और आर. श्मित का अर्थशास्त्र, एन्. पी. उन्नी का कौटिल्यज़ अर्थशास्त्र, राधावल्लभ त्रिपाठी का कौटिल्यज़ अर्थशास्त्र एण्ड माडर्न वर्ल्ड, राजेन्द्र प्रसाद का पोलिटिको- ज्योग्राफ़िकल एनैलिसिस ऑफ़ दि अर्थशास्त्र, ऋतु कोहली का कौटिल्यज़ पोलिटिकल थ्योरी, वी. के गुप्त का कौटिल्यज़ अर्थशास्त्र- एक लीगल, क्रिटिकल एण्ड एनेलिटिक स्टडी, एम्. बी. चान्दे का अर्थशास्त्र का अंग्रेज़ी अनुवाद, भगवान् दास केला का कौटिल्य के आर्थिक विचार, भुवनेश्वरीदत्त मिश्र का कौटिल्य राजनीति, एम्. बी. कृष्ण राव का कौटिल्य अर्थशास्त्र का सर्वेक्षण, मणिशंकर प्रसाद का कौटिल्य के राजनीतिक एवं सामाजिक विचार, मंजुलता शर्मा का कौटिल्य के अर्थशास्त्र में राज्यदर्शन, रजनी कान्त पाण्डेय का कौटिल्य अर्थशास्त्र में सत्ता एवं राजनीति, हरिओम् निरंजन का कौटिल्य अर्थशास्त्र तथा पाण्डेय रामतेजशास्त्री का रंजना नामक हिन्दी टीका के साथ कौटिलीयम् अर्थशास्त्रम्। इन ग्रन्थों के अतिरिक्त भारी संख्या में अर्थशास्त्र पर शोध लेख भी पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए। किञ्च, आज के अर्थशास्त्र (इकोनोमिक्स), राजनीतिशास्त्र (पोलिटिक साइंस) तथा समाजशास्त्र (सोशोलोजी) के ग्रन्थों ने इससे सामग्री ली और इसे उद्धृत किया। इन ग्रन्थों, लेखों और उद्धृत करने वाले ग्रन्थों और लेखों की संख्या अब इतनी हो गई है कि उनकी एक बृहत् सूची, बिल्लियोग्राफी की आवश्यकता अनुभव की जाने लगी है।

यद्यपि अर्थशास्त्र पर इतना अधिक काम हुआ है तो भी इसमें ऐसे स्थल हैं, जिन पर विचार या पुनर्विचार की आवश्यकता है। ~~उसके लिए आज की तरह की चर्चागोष्ठियों की प्रासंगिकता है।~~

CC-O. Prof. Satya Vrat Shastri Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जैसा कि पहले कहा जा चुका है अर्थशास्त्र विश्वकोष की कोटि का ग्रन्थ है। जिसमें पन्द्रह अधिकरण हैं, डेढ़ सौ अध्याय हैं, छः हज़ार पद्य हैं। इतने विशाल ग्रन्थ में व्याख्या या विशदीकरण के लिए अवकाश निरन्तर रहेगा ~~जिसे, मुझे पूर्ण विश्वास है, कि उपस्थित विद्वत्समाज सक्षमता से प्रस्तुत करेगा।~~

~~मेरा यह दृढ़ मत है कि~~ अर्थशास्त्र की उपयोगिता उसके अपने समय की भारत की स्थिति को समझने के लिए ही नहीं है अपितु आज के भारत की स्थिति को समझने की भी। यह बहुत सन्तोष की बात है आज के अधिकारीगण ने आज के सन्दर्भ में भी इस महनीय कृति की उपयोगिता को समझा है। १ अगस्त, २००२ के दैनिक जागरण के कानपुर के अंक में प्रकाशित समाचार के अनुसार भारत के रक्षा सम्बन्धी अनुसन्धान और विकास संगठन, डिफ़ैंस रिसर्च एण्ड डिवेलपमैण्ट ऑरगेनाइज़ेशन ऑफ़ इण्डिया ने पूना विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों को सुरक्षाबलों की कार्यक्षमता एवं कुशलता बढ़ाने के उद्देश्य से अर्थशास्त्र की समीक्षा की बृहद् योजना पर कार्य करने को कहा है जो अब लगभग समाप्ति पर है।

अर्थशास्त्र के अनेक प्रतिपादन और सिद्धान्त समय की कसौटी पर खरे उतरे हैं। हर काल और स्थिति में उनसे मार्गदर्शन मिल सकता है। उन्हें ठीक तरह से हृदयंगम कर उनका पालन आज के सन्दर्भ में भी उतना ही उपयोगी है जितना कि यह कौटिल्य के समय में था। आज दलितों के उद्धार की सर्वत्र चर्चा है। कौटिल्य ने दो सहस्राब्दी पूर्व इसकी आवश्यकता को समझ लिया था। उनका काम मात्र सवर्णों की सेवा ही नहीं था। दीर्घदर्शी कौटिल्य ने जीविका के अनेक क्षेत्रों के द्वार उनके लिए खोल दिए थे। वे खेती, पशुपालन, वाणिज्य-व्यवसाय, शिल्प, अभिनय आदि अनेक प्रकार के कार्य कर सकते थे- शूद्रस्य.... वार्ता कारुकुशीलवकर्म च। न केवल इतना ही। कौटिल्य ने तो यहां तक कह दिया कि सैनिकों में शूद्र सैनिक अन्य वर्णों के सैनिकों की अपेक्षा अधिक श्रेष्ठ हैं। उनके अनुसार सैनिक में आवश्यकता है बलिष्ठता की। इसका वर्ण से कोई सम्बन्ध नहीं। उनसे पूर्व के आचार्यों ने ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इन वर्णों के सैनिकों में एक-एक कर नीचे से ऊपर के वर्ण के सैनिकों को- श्रेष्ठ बताया था- शूद्र सैनिकों से वैश्य सैनिक श्रेष्ठ हैं, वैश्य सैनिकों से क्षत्रिय सैनिक श्रेष्ठ हैं, क्षत्रिय सैनिकों से ब्राह्मण सैनिक श्रेष्ठ हैं। कौटिल्य ने इस क्रम को बदल दिया। उन्होंने शूद्रों को सर्वोपरि रख कर उसी क्रम से सैनिकों की श्रेष्ठता प्रतिपादित की। यह उनका उस समय जब जातिवाद एवं वर्णवाद अपने चरम शिखर पर था निश्चित ही एक क्रान्तिकारी चिन्तन था। उनका स्पष्ट कथन है- बहुलसारं वैश्यशूद्रबलम्। कौटिल्य ने शूद्रों को जमीन का अधिकार, लैण्ड राइट् भी दिया था। उन्होंने राजा को निर्देश दिया था कि वह इस प्रकार के गांव बसाए जिनमें शूद्र जाति के खेतिहर परिवारों जिनकी संख्या सौ से कम नहीं और पांच से अधिक नहीं होनी चाहिए। इनकी सीमा कोस- दो कोस तक की हो सकती है जहां वे एक दूसरे की रक्षा कर सकें- शूद्रकर्षकप्रायं कुलशतावरं पञ्चशतकुलपरं ग्रामं क्रोशद्विक्रोशसीमानमन्योन्यारक्षं निवेशयेत् (१२१.१)। कूटनीतिक कार्यों में शूद्रों की नियुक्ति को भी कौटिल्य ने मान्यता दी थी। शूद्रों के अधिकारों और उनसे सम्बद्ध कानूनों पर एक पूरा का पूरा अध्याय ही अर्थशास्त्र में है।

भ्रष्टाचार की आजकल बहुत चर्चा है। यह देश को भीतर ही भीतर खोखला किए जा रहा है। विश्व में भ्रष्टाचार में लिप्त देशों में भारत १२५ वें स्थान पर है। कौटिल्य ने बहुत पहले ही समझ लिया था कि पैसे के आकर्षण को रोक पाना कितना कठिन होता है। इसलिए उसने राजा को उन सब विभागों में जिनका सम्बन्ध वित्तीय प्रबन्धन से है नियुक्तियां करते समय

CC-O. Prof. Satya Vrat Shastri Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अत्यन्त सावधानी बरतने को कहा है। पैसे के प्रबल आकर्षण को कौटिल्य ने बहुत प्रभावी ढंग से एक रूपक के माध्यम से रेखांकित किया है। उनका कहना है कि यह सम्भव नहीं कोई चीनी के गोदाम में रहे और चीनी चखे नहीं। शासक को गुप्तचरों के माध्यम से आय-व्यय आदि वित्तीय प्रबन्धन से सम्बद्ध कर्मचारियों पर कड़ी निगरानी रखनी चाहिए। यह गुप्तचर व्यवस्था आज की भ्रष्टाचार विरोधी कार्य-दल, एण्टी करप्शन टास्क फोर्स का उनके अपने समय का रूप है। गुप्तचर व्यवस्था पर कौटिल्य ने बहुत बल दिया है। उनके चिन्तन में इसका स्वरूप एवं कार्यक्षेत्र बहुत व्यापक है। शासन-तन्त्र में गुप्तचरों के एक जाल स्पाइ नेटवर्क की उनकी परिकल्पना थी, जिससे हर विभाग पर निगरानी रखी जा सके और जिस कारण शासन भ्रष्ट एवम् अकर्मण्य तथा अकुशल कर्मचारियों के चुंगल में न फंस सके। स्वशासन के साथ-साथ सुशासन देने पर कौटिल्य का निरन्तर आग्रह रहा है।

भारत सरकार इन दिनों साक्षरता (लिटरेसी) पर बल दे रही है। सर्व शिक्षा अभियान आदि अभियान चलाए जा रहे हैं। कौटिल्य ने अपने समय में ही इसकी आवश्यकता को जान लिया था। उनका कहना है कि पढ़ाई-लिखाई न करना व्यक्ति में बुराइयों को जन्म देता है और उसकी आपदाओं का कारण बनता है। अनपढ़ व्यक्ति बुराइयों से होने वाली हानियों को नहीं देख पाता है- अविद्याविनयः पुरुष-व्यसनहेतुः। अविनीतो हि व्यसनदोषान् न पश्यति (८.१२६.३)।

अर्थशास्त्र में स्वचक्र और परचक्र नाम से एक बहुत ही रोचक चर्चा है। स्वचक्र से अभिप्राय है अपने राष्ट्र में गड़बड़ी या अव्यवस्था और परचक्र से दूसरे राष्ट्र में गड़बड़ी या अव्यवस्था। यहां विचार का विषय यह है कि इन दोनों में कौन सा अधिक चिन्तित करता है। गड़बड़ी कई कारणों से हो सकती है। कर अधिक लगाने से या अत्याचार एवम् उत्पीडन से या अन्य किन्हीं कारणों से प्रजा शासन से विमुख हो जाय और विद्रोह कर बैठे। कौटिल्य के अनुसार अन्य देशों की गड़बड़ी अपने देश की गड़बड़ी की अपेक्षा अधिक चिन्ता का विषय है। यह वह स्थिति है जिसका भारत को आज सामना करना पड़ रहा है। अस्थिर पाकिस्तान या अफ़गानिस्तान भारत के हित में नहीं है। इसका प्रभाव भारत पर न पड़े यह सम्भव नहीं है। यह केवल भारत की ही स्थिति नहीं है। अमेरिका जैसा दूर का देश भी इससे प्रभवित हो सकता है। उसे यह चिन्ता सताए जा रही है कि यदि पाकिस्तान का शासन और अधिक कमज़ोर हुआ तो परमाणु हथियारों का ज़खीरा कहीं आतंकवादियों के हाथ न चला जाए। यदि ऐसा होता है तो समस्त विश्व पर खतरे के बादल मंडरा जाएंगे। पिछले दिनों अमेरिका की आर्थिक व्यवस्था गड़बड़ा गई थी इससे समस्त विश्व प्रभावित हुआ था। स्वचक्र, अपने देश की गड़बड़ी, पर तो किसी तरह काबू पाया भी जा सके पर परचक्र, दूसरे देश/देशों की गड़बड़ी पर वह सम्भव नहीं
CC-O. Prof. Satya Vrat Shastri Collection. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha
है। अतः परचक्र अधिक चिन्ता का विषय है। यह कौटिल्य की सूझबूझ है कि उन्होंने लगभग ढाई हज़ार पहले इस तथ्य को साक्षात् कर लिया था।